विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:०६-१०- २०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

नाट्यांश:-

काक:- (अट्टहासपूर्णेन स्वरेण) –सर्वथा अयुक्तमेतत् यन्मयूर -हंस-कोकिल -चक्रवाक – शुक- सारसादिषु पक्षिप्रधानेषु विद्यमानेषु दिवान्धस्यास्य करालवक्त्रस्याभिषेकार्थं सर्वे सज्जा: ।पूर्णं दिनं यावत् निद्रायमाण:एष: कथमस्मान् रक्षिष्यति वस्तुतस्तु ।

स्वभावरौद्रमत्युग्रम् क्रूरमप्रियवादिनम्

उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति

शब्दार्था:-

अयुक्तम् -अनुचित है , विद्यमानेषु -वर्तमान रहने पर , दिवान्धस्य - दिन के अंधे के अभिषेकार्थम् – अभिषेक के लिए , निद्रायमाण: - सोते हुए , वस्तुत: - सोते हुए स्वभावरौद्रम् –भयंकर स्वभाव वाले, क्रूरम् –निर्दयी को , सिद्धि: -सफलता , अति- उग्रम्- बहुत क्रोधी को ,अप्रियवादिनम् –अप्रिय बोलने वाले को भविष्यति –होगा

अर्थ

कौआ-(अट्टहास से युक्त स्वर से) यह पूरी तरह से अनुचित है कि मोर - हंस- कोयल – चकवा-तोता-सारस आदि प्रमुख पक्षियों के वर्तमान रहने पर पर दिन के अंधे इस भयानक मुख वाले के राजा बनाने के लिए सब तैयार हैं।दिन भर सोता हुआ यह कैसे हमारी रक्षा करेगा । वास्तव में तो –

भयानक स्वभाव वाले , बहुत क्रोधी ,निर्दयी और अप्रिय बोलने वाले उल्लू को राजा बनाकर निश्चत रूप से क्या फायदा होगा ?अर्थात् क्या लाभ होगा ?